की बाइबिल है। ... तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे।"

तुलसी की भक्ति भावना

रामभक्त कवियों में तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है। श्रीरामचरितमानस एवं विनय-पत्रिका दोनों ही ग्रन्थों में तुलसी की भक्तिभावना के दर्शन होते हैं। कर्म और ज्ञान की अपेक्षा वे 'भक्ति' को श्रेष्ठ मानते थे। उनकी भक्ति का मूल आधार 'दैन्य' है। वे 'सकाम' भक्ति की अपेक्षा 'निष्काम' भक्ति को अधिक महत्त्व देते थे और अपने आराध्य राम के प्रति पूर्ण समर्पित थे। उनकी भक्ति 'दास्यभाव' की है। राम को वे अपना सर्वस्व मानते हैं और जन्म-जन्म तक राम के चरणों में भक्ति बनी रहे यही वरदान प्रभु से माँगते हैं—

धर्म न अर्थ न काम रुचि गति न चहौं निर्वान।
जन्म-जन्म रति राम पद यह बरदान न आन॥

उनकी स्पष्ट अवधारणा है कि राम के प्रति भक्त का दास भाव रहने पर ही संसार सागर से उद्धार होता है—

सेवक-सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि॥

श्रीरामचरितमानस के 'उत्तरकाण्ड' में तुलसीदास जी ने ज्ञानमार्ग की कठिनता एवं जटिलता का निरूपण करते हुए भक्तिमार्ग की सरलता का प्रतिपादन किया है और यह बताया है कि भगवद्भक्ति से ही बिना प्रयास के अविद्या का नाश होता है। यह भक्ति चिन्तामणि के समान है, जिसके हृदय में यह निवास करती है, उसका हृदय निरन्तर प्रकाशित रहता है। मोह, लोभ आदि विकार इस प्रकाश को नष्ट नहीं कर पाते। वे यह भी कहते हैं कि रामभक्ति रूपी यह चिंतामणि राम-कृपा से ही प्राप्त होती है। सत्संग से यह सर्वथा सुलभ हो जाती है। भक्त को जप, तप, ज्ञान, योग, यज्ञ, साधन आदि करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए बस मन की सरलता, निष्कपटता एवं संतोषवृत्ति की आवश्यकता है। शुभ आचरण करने वाले, किसी से द्वेष न रखने वाले, प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पित, किसी से कुछ भी अपेक्षा न करने वाले और निर्भयतापूर्वक जीवन-यापन करने वाले व्यक्ति ही राम के सच्चे भक्त है।

भगवद् भक्त को कभी अविद्या नहीं व्यापती इसलिए उसका कभी नाश नहीं होता। भक्तिहीन ब्रह्म भी परमात्मा को प्रिय नहीं होता और भक्तियुक्त प्राणी चाहे कितना ही पामर क्यों न हो परमात्मा का परमप्रिय है।

तुलसी की भक्ति पद्धति की प्रमुख विशेषताओं का निरूपण निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकता है-

(1) **राम के प्रति अनन्यता एवं दास्य भावना की भक्ति**—गोस्वामी तुलसीदास भक्ति-काल की सगुण धारा के अन्तर्गत आने वाली रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने अपने सभी काव्य-ग्रन्थों में राम के प्रति अनन्य भक्ति-भाव व्यक्त किया है, इसलिए उन्हें राम का एकनिष्ठ एवं अनन्य भक्त कहा गया है। वे चातक को प्रेम और भक्ति का परम आदर्श मानते हुए कहते हैं—

एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।
एक राम घनस्याम हित, चातक तुलसीदास॥

Scanned with CamScanner

अपने इष्टदेव राम के प्रति उनके मन में अनन्य प्रेम, भक्ति-भाव, श्रद्धा, विश्वास एवं भरोसा व्याप्त है। श्र
और विश्वास ही तुलसी की भक्ति के मेरुदण्ड हैं। श्रीरामचरितमानस एवं विनयपत्रिका—दोनों ही काव्य ग्रन्थ
तुलसी की भक्ति-भावना अभिव्यक्त हुई है। तुलसी की भक्ति दास्य भाव की भक्ति है। वे अपने प्रभु राम के प्रति पू
समर्पित थे और राम को अपना स्वामी तथा स्वयं को राम का सेवक मानते थे। श्रीरामचरितमानस में वे स्वा
घोषणा करते हैं कि 'सेवक-सेव्य' भाव के बिना कोई व्यक्ति इस संसार-सागर से तर नहीं सकता।

तुलसी की भक्ति में 'दैन्य' की प्रधानता है। इस दैन्य के कारण वे अपने इष्टदेव राम को महान् एवं
सर्वगुण सम्पन्न तथा स्वयं को तुच्छ, छोटा, खोटा और पापी मानते हैं। 'आत्म निवेदन' की इस प्रवृत्ति के कारण
वे कहते हैं।

राम सों बड़ो है कौन मोसो कौन छोटो?
राम सों खरो है कौन मोसो कौन खोटो?

Scanned with CamScanner